इकाई 24 उत्तरी एवं पश्चिमी भारत

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद :

- आप उन क्षेत्रीय शक्तियों के विषय में बता सकेंगे जिनका उत्तरी तथा पश्चिमी भारत में उदय हुआ,
- आप इन राज्यों के क्षेत्रीय प्रसार के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे,
- इन राज्यों के अपने पड़ोसी राज्यों तथा अन्य दूसरी क्षेत्रीय शक्तियों के साथ संबंधों के विषय में भी आप जान सकेंगे, और
- आपको दिल्ली सल्तनत और इन राज्यों के बीच संबंधों के विषय में भी जानकारी प्राप्त होगी।

24.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाई अर्थात् इकाई 23 में आप देख चुके हैं कि मध्य तथा पूर्वी भारत में क्षेत्रीय शक्तियों का उदय कैसे हुआ। इस इकाई में हमारा ध्यान उत्तरी तथा पश्चिमी भारत में क्षेत्रीय शक्तियों के उदय पर केंद्रित होगा। इस इकाई में हम कश्मीर, राजपूताना, सिंध तथा गुजरात के क्षेत्रीय राज्यों के प्रादेशिक प्रसार की विवेचना करेंगे।

इन क्षेत्रीय शक्तियों में से कुछ दिल्ली सल्तनत के पतन का परिणाम थीं। जबकि कुछ का स्वतंत्र तौर पर विकास हुआ था। कश्मीर राज्य का विकास स्वतंत्र तौर पर हुआ जबकि गुजरात राज्य का विकास दिल्ली सल्तनत के पतन के फलस्वरूप हुआ। सिंध एवं राजपूताना लगातार दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों से प्रभावित थे। यहाँ तक कि वे दिल्ली सल्तनत का एक भाग भी रहे। फिर भी सिंध और राजपूताना अपनी-अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं को बनाए रखने में सफल हुए।

24.2 कश्मीर

भौगोलिक तौर पर कश्मीर घाटी के दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम में पीर पंजाल की पर्वत शृंखलायें तथा दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर-पश्चिम क्षेत्र शक्तिशाली मध्य तथा उत्तर-पश्चिमी हिमालय पर्वत की शृंखलाओं से ढका है। कश्मीर घाटी के अंतर्गत एक ओर झेलम नदी एवं इसकी सहायक नदियों का मैदानी क्षेत्र आता है तो दूसरी ओर पठारी क्षेत्र है। नदी के किनारे का मैदानी क्षेत्र उपजाऊ है तथा भूमि कछारी है और यहाँ काफी मात्रा में खेती होती है, लेकिन ऊँचे पठार कम उपजाऊ हैं और अगर खेती की भी जाती है तो फसल अच्छी नहीं होती है। कश्मीर घाटी के पर्वतों से घिरे होने के कारण दर्रों (जोजिला, बनिहल, बुदिल, पीर पंजाल तथा तोशामैदान) का बहुत अधिक महत्व है और राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक प्रक्रियाओं पर उनका व्यापक प्रभाव हुआ है। दक्षिणी दर्रों को लोदी शासकों के समय तक पार न किया जा सका था किंतु बारामुला, पाखली तथा स्वात के दर्रों को सदैव पार किया जाता रहा।

13वीं सदी ई. का कश्मीर एक स्वतंत्र राज्य था लेकिन वहाँ का हिन्दू राजा जगदेव (1198-1212 ई.) एक कमजोर शासक था। उसके शासन के दौरान एक असंतुष्ट सामंतीय समुदाय दमरा ने विद्रोह किया परंतु इस विद्रोह को दबा दिया गया। लेकिन उसके राजादेव (1212-35 ई.) संग्रामदेव (1235-52 ई.) तथा रामदेव (1252-56) जैसे उत्तराधिकारी अपनी शक्ति को बनाए न रख सके। रामदेव की मृत्यु के बाद दमरा सामंत सिंहदेव (1286-1301 ई.) को शासन पर अधिकार करने का अवसर मिल गया। लेकिन उसके वंश का शासन भी अधिक दिनों तक न चला। तुर्कों के भारत आने के बाद लगभग दो सदियों तक कश्मीर उनके प्रभाव से मुक्त रहा। यद्यपि इससे पहले महमूद गज़नवी ने 1015 ई. तथा 1021 ई. में दो बार कश्मीर पर आक्रमण करने का प्रयास किया लेकिन हिमालय तथा हिन्दुकुश की दुर्गम पहाड़ियों ने उसकी इच्छाओं को पूरा न होने दिया। कश्मीर में कभी भी आक्रमणकारी प्रवेश नहीं कर सकते थे — इस मान्यता को 1320 ई. में उस समय तोड़ दिया गया जबकि सेनापति दुलाचा ने कश्मीर पर आक्रमण कर उसे पराजित करने में सफलता प्राप्त की और अथाह संपत्ति को लूटा। लेकिन भयंकर तूफान के कारण बनिहाल दर्रे पर उसकी मृत्यु हो गई।

इस आक्रमण के गहरे प्रभाव हुए। इसने कश्मीर में मुसलमान शासन की स्थापना के मार्ग को प्रशस्त कर दिया। जिस ढंग से राजा सहदेव ने मंगोल समस्या का सामना किया, तथा मंगोलों द्वारा कश्मीर में भयंकर तबाही के कारण कश्मीर की जनता में असंतोष बढ़ा। इस स्थिति का लाभ लद्दाख के भौटा राजकुमार रिंचन ने उठाया और 1320 ई. में उसने सिंहासन पर अधिकार कर लिया। उसने शीघ्र ही इस्लाम को स्वीकार कर लिया और उसने सुल्तान सद्रुद्दीन की उपाधि धारण की। उसकी हत्या के बाद कश्मीर राज्य में लम्बे समय तक अराजकता की स्थिति बनी रही। बाद में शहाबुद्दीन (1356-74) ने सल्तनत को मजबूत आधार प्रदान करने का प्रयास किया। जिस समय 1398 ई. में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया, उसने फौलाद बहादुर तथा ज़ैनुद्दीन को कश्मीर के सुल्तान सिकन्दर के पास दूत बनाकर भेजा और उन्होंने सुल्तान से विशाल धन-राशि की मांग की। इससे एक बार फिर कश्मीर में अराजकता फैल गई। 1420 ई. में ज़ैन-उल आबेदीन कश्मीर के सिंहासन पर बैठा। उसने सन् 1470 तक 50 वर्षों के लिए कश्मीर में कुशलतापूर्वक शासन किया। उसने अपने राज्य की सीमाओं को पश्चिमी तिब्बत तक बढ़ा दिया और लद्दाख तथा शैल पर अधिकार कर लिया। लेकिन उसकी उपलब्धियों को शीघ्र ही उसके उत्तराधिकारियों ने नष्ट कर दिया। उसकी मृत्यु ने आंतरिक कलह को जन्म दिया। अंततः 16वीं सदी के प्रारंभ में सैय्यद शासकों ने कश्मीर राज्य की सत्ता को प्राप्त कर लिया।

सैय्यदों के शासन तक दिल्ली के सुल्तानों एवं कश्मीर के शासकों के बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ। लेकिन बहलोल लोदी के समय में कश्मीर एवं दिल्ली के बीच संबंध तनावपूर्ण हो गये। **तबकात-ए अकबरी** के अनुसार हैदर शाह (1470-72) की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के लिए प्रारंभ हुए संघर्ष में बहलोल लोदी के आदेश पर पंजाब के गवर्नर तातार खाँ ने सुल्तान हसन के चाचा बहराम खाँ का पक्ष लिया। सुल्तान हसन ने बहराम खाँ का वध करने में सफलता प्राप्त की। तातार खाँ के द्वारा बहराम खाँ की सहायता करने से सुल्तान हसन नाराज हो गया। उसने मलिक ताज़ि भट्ट को पंजाब पर आक्रमण करने के लिए भेजा। ताज़ि भट्ट ने न केवल तातार खाँ को पराजित किया बल्कि उसने सियालकोट पर अधिकार कर लिया। सुल्तान हसन की मृत्यु (1484) के बाद सैय्यद हसन के पुत्र सैय्यद मौहम्मद के

आदेश पर तातार खाँ ने कश्मीर पर एक बार फिर आक्रमण किया। जम्मू एव कश्मीर की संयुक्त सेनाओं के सामने तातार खाँ को पराजय का मुंह देखना पड़ा।

बोध प्रश्न 1

1) कश्मीर के एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उदित होने में भूगोल की भूमिका की विवेचना कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....

2) ज़ैन-उल आबेदीन कौन था?

....
....
....
....
....
....
....
....

24.3 उत्तर-पश्चिम : राजपूताना

भारत के वर्तमान उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के अंतर्गत राजस्थान, गुजरात का एक भाग तथा पंजाब आता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से इस क्षेत्र के अंतर्गत थार का वह विशाल रेगिस्तान है जिसमें बीकानेर, जैसलमेर तथा बाढ़मेर आते हैं। दक्षिण-उत्तर क्षेत्र में कच्छ का वह मैदान है जिसके अंतर्गत नगर पारकर का राज्य फला-फूला। अरावली पहाड़ियों की तलहटी में प्रसिद्ध मेवाड़ राज्य, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़ तथा रणथम्भौर का विकास हुआ। इस क्षेत्र में राजपूतों के कबीलाई राजतंत्रों के उदय से पूर्व भील, मीना, मेर तथा जाट यहाँ की स्थानीय जातियाँ थीं। ये जातियाँ भिन्न-भिन्न इलाकों में फैल गईं। भीलों की प्रमुखता मेवाड़ डूंगरपुर तथा बांसवाड़ राज्यों में थी और मीना, मेर तथा जाट क्रमशः जयपुर, जोधपुर तथा बीकानेर में प्रमुख थे। इन स्थानीय जातियों को राजतंत्र स्थापित करने में सफलता प्राप्त न हो सकी। जबकि राजपूत जो भारत के उत्तर-पश्चिम भाग से आये थे, इस कार्य में सफल हुए।

जैसलमेर के भाटी पंजाब में स्थित सतलज नदी के मैदान से आये थे और सिसोदिया दक्षिण भारत में नर्मदा नदी की घाटी से। मध्य भारत में स्थित नरवर से कछवाहा आये तथा जोधपुर एवं बीकानेर के राठौरों के संबंध कन्नौज क्षेत्र से थे। राजपूतों के विस्थापन से कुछ महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों की ओर संकेत प्राप्त होता है। प्रारंभ में वे नदियों के किनारों पर बसे और यहाँ पर उनको पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हुआ तथा खेती करने के लिए अच्छी भूमि। जिस समय आबादी में वृद्धि हुई और उत्तराधिकार या अन्य विषयों को लेकर झगड़े बढ़ने लगे, तब कमजोर वर्ग उन क्षेत्रों की ओर प्रस्थान कर गये जहाँ पर जनसंख्या कम थी और ऐसी कोई राजनीतिक शक्ति विद्यमान न थी जो इन नये आगन्तुकों का अपने-अपने क्षेत्रों में विरोध कर पाती। ये नये आगन्तुक वहाँ की मूल जातियों की तुलना में राजनीतिक संगठन तथा युद्ध करने की कला में कहीं अधिक कुशल थे। इन नये आगन्तुकों की संख्या कम होने के कारण उन्होंने

स्थानीय कबीलों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए दोहरी नीति का अनुसरण किया। प्रथम, शक्ति का प्रयोग किया और दूसरे सामाजिक-धार्मिक उपायों को अपनाया।

शक्ति के प्रदर्शन और अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने पहले किलों का निर्माण कराया। दूसरा कार्य सामाजिक-धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था। विस्थापित जातियों ने मस्तक पर तिलक लगाने की एक परंपरा का प्रारंभ किया। इस तिलक लगाने की परंपरा के अनुसार प्रत्येक उत्तराधिकारी सरदार के मस्तक पर एक स्थानीय जाति या कबीले के सदस्य द्वारा तिलक लगाया जाता था। उदाहरण के तौर पर मेवाड़ में भील, बीकानेर में गोदरा जाट तथा जयपुर में मीना अपने क्षेत्रों के उत्तराधिकारी सरदारों के मस्तकों पर तिलक लगाते थे। तिलक लगाने की इस परंपरा के बिना उत्तराधिकारी सरदार को इस क्षेत्र तथा इसकी जनता का वैध सरदार या प्रमुख नहीं माना जाता था। राजपूत वंशों द्वारा 16वीं-17वीं सदियों में मुगल शासकों की अधीनस्थता स्वीकार करने के बावजूद भी स्थानीय जाति द्वारा तिलक करने की यह सामाजिक परंपरा निरंतर जारी रही। राजनीतिक तौर पर मुगल सम्राट इन विशेषाधिकारों का उपयोग करते हुए शासक वंश के परिवार के एक सदस्य को उत्तराधिकारी घोषित करते थे। लेकिन स्थानीय स्तर पर तिलक लगाने के सामाजिक अनुष्ठान के कार्य को स्थानीय जाति के द्वारा ही किया जाता रहा। यह केवल प्रतीकात्मक था जबकि इस प्रथा का अर्थ था कि वास्तविक शक्ति मूल जाति के हाथों में थी। तिलक लगाने का एक तात्पर्य यह भी था कि इन जातियों ने शासन करने की अपनी शक्तियाँ एक ऐसे सरदार को सौंप दी हैं जिसका कर्त्तव्य इस क्षेत्र की जनता की बाहरी आक्रमण से रक्षा करना तथा जनता के लिए लोक हित कार्यों की देखभाल करना था। प्रारंभ में इस सामूहिक रीति का अनुसरण स्थानीय लोगों की भावनाओं का सम्मान करने के लिए किया गया। लेकिन समय के चलते यह परंपरा मात्र एक सामाजिक अनुष्ठान बन कर रह गई। धीरे-धीरे राजपूत लोग क्षेत्र के वास्तविक शासक एवं सरदार हो गये तथा कबीलाई लोग किसान। सरदार लोग सैनिकों तथा स्वयं के रख-रखाव के लिए किसानों से अतिरिक्त उत्पाद को प्राप्त करते थे। इस अतिरिक्त उत्पाद को प्राप्त करने के हेतु इसको धार्मिक स्वरूप प्रदान कर इसे **भोग** कहा गया। **भोग** शब्द से धार्मिक पवित्रता का बोध होता है : देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना में चढ़ाई गई भेंट को भी **भोग** कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना गया। इसलिए राजा तथा उसके अधिकारियों को दिए जाने वाले **भोग** को धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाता था। इसने राजा के प्रभुत्व को और शक्तिशाली बनाया और स्थानीय लोगों द्वारा विद्रोह किए जाने की संभावनाएं काफी क्षीण हो गई। बाह्य आक्रमण से राज्य की रक्षा करना राजा का अनुबंधित कर्त्तव्य था। कुछ निश्चित भू-भाग पर सरदार के पास सामंतीय अधिकार थे और इसने कबीलाई राज्य से राजतंत्रीय राज्य को जन्म दिया।

24.3.1 गुहिल एवं सिसोदिया

उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में जिस सबसे शक्तिशाली राज्य का उदय हुआ वह मेवाड़ का राज्य था। 13वीं शताब्दी के दौरान जैत्र सिंह (1213-61) ने गुहिल शक्ति को सुदृढ़ किया और वह तुर्कों के आक्रमणों का सामना करने से बचा रहा। अलाउद्दीन खलजी ने राणा रतन सिंह को पराजित करने में सफलता प्राप्त की और सन् 1303 में मेवाड़ पर अधिकार कर लिया। 14वीं सदी ई. के दौरान मेवाड़ राज्य में आंतरिक कलहों का बोलबाला हो गया। इसके फलस्वरूप सिसोदिया राजा हमीर के द्वारा मेवाड़ को विजित करने में सफलता प्राप्त हुई। इस तरह मेवाड़ में सिसोदिया राज्य की नींव पड़ी। हमीर ने मेवाड़ राज्य के अधीन अजमेर, जहाजपुर, मण्डलगढ़, छहापेन, बूंदी, नागौर, जालेर तथा साम्भर को कर लिया। लेकिन राणा कुम्भा (1433-68) के शासनकाल में सिसोदिया शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर थी। राणा कुम्भा के शासन काल में एक महत्वपूर्ण घटना यह घटित हुई कि सिसोदियों पर राठौड़ वंश का प्रभाव बढ़ने लगा। राणा कुम्भा किसी तरह से राठौड़ों पर नियंत्रण बनाए रखने में सफल हुआ।

राणा कुम्भा ने मेवाड़ राज्य की सीमाओं को दूर-दराज तक बढ़ाया। लगभग सम्पूर्ण राजस्थान उसके शासन के अधीन हो गया। उसने कोटा, बूंदी, आमेर, नरवर, दुर्गापुर, साम्भर, नागौर, रणथम्भौर, तथा अजमेर पर अधिकार कर लिया। उसने मालवा तथा गुजरात के सुल्तानों के आक्रमणों को कई बार निष्क्रिय किया। (इन झड़पों के विषय में अलग से गुजरात एवं मालवा के भाग में विस्तृत रूप से लिखा जाएगा)। राणा कुम्भा का वध उसके पुत्र उदा के द्वारा कर दिया गया और 1468 में वह सिंहासनारूढ़ हुआ। उदा (1468-73) और उसके उत्तराधिकारी रैमल (1473-1508) के शासनकाल में निरंतर सत्ता के लिए संघर्ष होता रहा और 1508 में अंततः यह संघर्ष तभी समाप्त हुआ जब राणा सांगा ने मेवाड़ के सिंहासन को प्राप्त किया।

24.3.2 वागड़ के गहलौत

मेवाड़ के गुहिल केवल मेवाड़ की सीमाओं तक ही सीमित न थे। 12वीं सदी ई. के प्रारंभ में मेवाड़ का सामंत सिंह अपने राज्य की स्थापना के लिए वागड़ (आधुनिक डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा) गया। लेकिन गुजरात के हस्तक्षेप के कारण वह लम्बे समय तक इस क्षेत्र पर अपना नियंत्रण कायम न कर सका। जब वागड़ पर गुजरात का नियंत्रण कमजोर हो गया, तभी सामंत सिंह का एक वंशज जगत सिंह 13वीं सदी ई. में इस क्षेत्र को अपने अधीन कर पाया। 14वीं तथा 15वीं सदियों के दौरान गुहिलों के नियंत्रण को सुदृढ़ किया गया। अक्सर उनके संघर्ष गुजरात के सुल्तान के साथ होते रहते थे। मालवा का सुल्तान भी उनका स्थायी शत्रु था।

गुहिलों की एक दूसरी शाखा खेम सिंह के पुत्र राणा मोकल के नेतृत्व में प्रतापगढ़ गई तथा उसके एक वंशज सूरज मल (1473-1526) के द्वारा 15वीं सदी के अंत में प्रतापगढ़ में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की गई।

24.3.3 मारवाड़ के राठौड़

13वीं सदी ई. के मध्य राठौड़ों ने कन्नौज से पाली की ओर विस्थापन किया। राठौड़ सरदार सिहा ने पाली के ब्राह्मणों को मेर तथा मीनाओं के आक्रमण से मुक्त करने में मदद की। इस तरह से लगभग सन् 1243 ई. के आसपास उसने इस क्षेत्र पर अपने प्रभुत्व को स्थापित कर दिया और इसके बाद से राठौड़ सरदारों ने अपने शासन को इदर, मल्लानि, मंदसौर, जैसलमेर, बाड़मेर, अमरकोट एवं भीनमल पर स्थापित कर दिया। राठौड़ शक्ति राव चुण्डा (1384-1423) तथा राव जोधा (1438-89) के शासनकालों में अपने चरमोत्कर्ष पर थी।

1395 ई. में राव चुण्डा ने दहेज में मन्दसौर को प्राप्त किया। बाद में उसने अपने प्रभाव को खातू, डीड [illegible], साम्भर, नागौर तथा अजमेर तक फैला दिया जो दिल्ली सुल्तान के अधीन था। चुण्डा की बढ़ती शक्ति को चुनौती देने के लिए भाटियों, संखालों तथा मुल्तान के गवर्नर ने एक गुट बनाया। उन्होंने नागौर पर आक्रमण किया तथा 1423 ई. में चुण्डा का वध कर दिया। राव जोधा के अधीन राठौड़ एक महत्वपूर्ण शक्ति बन गए और उसने आगे अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाते हुए मेड़ता, फालोदी, पोखरान, भद्राजुन, सोजत, जैतारन, सिवाना, गौडवदा तथा नागौर के कुछ भागों को अपने अधीन कर लिया। राव शुजा के शासनकाल के दौरान (1492-1515) राठौड़ शक्ति के पतन के संकेत मिलने लगे। बीरन देव ऐसा प्रथम सरदार था जिसने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। इसके तुरंत बाद बाडमेर तथा पोखरन के सरदारों ने राठौड़ राज्य से अपने संबंध तोड़ लिये।

राठौड़ शक्ति केवल मारवाड़ क्षेत्र तक सीमित न थी और जोधा (11438-89) के पुत्र बीका के नेतृत्व में इसका प्रसार जंगल अर्थात् आधुनिक बीकानेर की ओर हुआ। बीका ने लगभग 1465 ई. में जंगल की ओर विस्थापन किया। उसने पुंगल के राव शेखा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करके अपनी स्थिति को मजबूत किया। राव शेखा ने अपनी पुत्री को उसे विवाह में दिया। इस क्षेत्र के जाटों ने भी उसके सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। सन् 1488 ई. में उसने बीकानेर नगर की स्थापना की और यह सत्ता का एक केंद्र बन गया। अपने पिता की मृत्यु के बाद बीका ने अपने पूर्वजों की जोधपुर गद्दी को प्राप्त करने का असफल प्रयास किया। उसने पंजाब के भी कुछ क्षेत्रों को विजित किया। 1504 में उसकी मृत्यु के समय उसके नियंत्रण में एक विशाल भू-भाग था।

24.3.4 छोटे राजपूत राज्य

उपरोक्त उद्धृत किए गए राजपूत राज्यों के अतिरिक्त राजपूताना में 13वीं सदी ई. से 15वीं सदी ई. के बीच अन्य कई छोटे "राज्यों" का उदय हुआ। सबसे महत्वपूर्ण जैसलमेर के भाटी थे। उन्होंने 11वीं सदी ई. के प्रारंभ में पंजाब से थार रेगिस्तान की ओर विस्थापन किया। संपूर्ण 14वीं एवं 15वीं सदियों के दौरान जैसलमेर शासकों के लगातार मेवाड़, मुल्तान, अमरकोट तथा बीकानेर के साथ संघर्ष होते रहे।

इसके बाद कछवाह आते हैं। उन्होंने मध्य भारत से धुन्धर की ओर विस्थापन किया। वे गुर्जर-प्रतिहार शासकों के सामन्त थे। 11वीं सदी ई. के दौरान कछवाह सरदार दुलाह राय ने नरवर से पूर्वी राजस्थान को विस्थापन किया तथा वहाँ पर उसने बड़गूजर को पराजित कर धुन्धर राज्य (आमेर, आधुनिक जयपुर) की स्थापना की। 15वीं सदी ई. के दौरान कछवाहों ने आमेर, मेद, बैराट तथा शेखवती क्षेत्र पर नियंत्रण बनाए रखा। मुगल शासन के दौरान उनका महत्व बढ़ गया।

हम पहले ही इकाई 9 में पढ़ चुके हैं कि जिस समय तुर्कों ने आक्रमण किया उस समय चौहान एक महत्वपूर्ण शक्ति थे। तुर्कों के हाथ पृथ्वीराज की पराजय (1192 ई. का तराइन का दूसरा युद्ध) के बाद चौहानों की शक्ति का पतन हो गया। उसके बाद जालौर, रणथम्भौर, नादोल, सिरोही तथा हडौती जैसे छोटे-छोटे सत्ता के केंद्रों का उद्भव हुआ और ये राज्य एक समय दिल्ली सल्तनत के भाग बन गए (देखें इकाई 14)। ये राज्य इतने कमजोर थे कि ये मेवाड़ या मारवाड़ के प्रहारों का सामना नहीं कर सकते थे।

13वीं सदी ई. के मध्य में किसी समय हाड़ाओं ने बूंदी-कोटा क्षेत्र में एक छोटा सा राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। वे मेवाड़ के राजा के सामन्त थे। समर सिंह ने सन् 1253-54 ई. में बलबन के आक्रमण के विरुद्ध अपने राज्य की रक्षा करने में सफलता प्राप्त की, लेकिन वह अलाउद्दीन के शक्तिशाली प्रहार का सामना न कर सका और युद्ध करते हुए वह मारा गया। सन् 1304 ई. में उसके पुत्र नपूज का भी अलाउद्दीन के हाथों वही हाल हुआ। 15वीं सदी ई. के दौरान हाड़ा शासकों ने मेवाड़, गुजरात तथा मालवा राज्यों को काफी नजराना दिया। वास्तव में, 13वीं सदी ई. से 15वीं सदी ई. के बीच बूंदी राज्य का नाम मात्र का अस्तित्व था।

13वीं-15वीं सदियों के दौरान अमरकोट एवं बाड़मेर क्षेत्र में करावी तथा सोधा के यादवों का एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय हुआ। लेकिन 13वीं सदी ई. से 15वीं सदी ई. के बीच उन्होंने क्षेत्रीय शक्तियों के निर्माण में कोई विशेष योगदान नहीं किया।

बोध प्रश्न 2

1) राजपूत कबीलों ने उत्तर-पश्चिम भारत में अपने राजतंत्रों को स्थापित करने में कैसे सफलता प्राप्त की?

....
....
....
....
....
....
....
....

2) राठौड़ कौन थे?

....
....
....
....
....
....
....
....

3) राजा कुम्भा की शक्ति के उदय की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

....
....
....
....
....

....

....

24.4 गुजरात

8वीं सदी ई.-12वीं सदी ई. के बीच गुजरात राज्य में चालुक्यों के उद्भव के विषय में आप खंड 3 की इकाई 9 में पहले ही पढ़ चुके हैं। सल्तनत की स्थापना के बावजूद भी 13वीं सदी ई. के दौरान गुजरात पर चालुक्यों का नियंत्रण बना रहा। खंड 4 की इकाई 15 में आप पढ़ चुके हैं कि अलाउद्दीन के सेनापतियों उलुग खां तथा नुसरत खां ने किस तरह से चालुक्य शासक राजा करण बघेला को पराजित किया और इस प्रकार उन्होंने गुजरात में सल्तनत राज्य की नींव रखी। संपूर्ण 14वीं सदी ई. में दिल्ली के सुल्तानों की गुजरात पर सर्वोच्चता बनी रही। लेकिन फिरोज़शाह के समय से सल्तनत का नियंत्रण कमजोर होता दिखायी पड़ता है । उसने शमसुद्दीन दमघनी को गुजरात का गवर्नर नियुक्त किया। 1398 ई. में तैमूर के आक्रमण के समय गुजरात को केंद्र से अलग होने का एक सुअवसर प्राप्त हो गया। इसके शीघ्र बाद ही उस समय गुजरात के गवर्नर जफरशाह (बाद में उसने मुजफ्फर शाह की उपाधि को धारण किया) ने 1407 ई. में गुजरात में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

अपनी स्वतंत्र स्थापना के समय से ही गुजरात राज्य का अपने पड़ोसियों – मालवा, राजपूताना, खानदेश तथा बहमनी राज्यों के साथ संघर्ष हुआ।

24.4.1 मालवा के साथ संबंध

मालवा के शासक गुजरात राज्य के परंपरागत शत्रु थे। 1408 ई. में मुजफ्फर शाह ने मालवा पर आक्रमण किया और मालवा के शासक होशंग शाह को बंदी बना लिया। यद्यपि होशंग शाह ने गुजरात की अधीनस्थता को स्वीकार कर लिया था किंतु वह गुजरात की बढ़ती शक्ति के प्रति ईर्ष्यालु था। गुजरात की शक्ति को कम समझकर मालवा के शासक ने गुजरात राज्य के शत्रुओं के साथ मित्रता कर ली। लेकिन गुजरात के शासक अहमद शाह ने होशंग शाह की शक्ति को कुचल दिया। बाद में कुतबुद्दीन अहमद शाह II के शासनकाल में (1451-59) मालवा के महमूद खलजी ने गुजरात पर आक्रमण किया, लेकिन उसके इस आक्रमण को गुजरात ने असफल कर दिया। बाद में, मेवाड़ के शासक राणा कुम्भा को पराजित करने के लिए महमूद खलजी ने कुतबुद्दीन अहमद शाह II के साथ गठबंधन बना लिया। लेकिन महमूद खलजी का यह कार्य शुद्ध तौर पर कूटनीतिक था और उसने ऐसे किसी भी सम्भावित अवसर को नहीं छोड़ा जिसके द्वारा वह गुजरात की प्रतिष्ठा को आघात कर सकता था।

24.4.2 राजपूताना के साथ संबंध

जिस अन्य शक्ति के साथ गुजरात लगातार संघर्षरत रहत, वह राजपूताना था। जिस प्रथम राजपूत राज्य को गुजरात का भाग बनाया गया वह इदर था। अहमद शाह ने शीघ्र ही डूँगरपुर पर (1433 ई.) अधिकार कर लिया। बाद में कुतबुद्दीन (1451-59) और महमूद बेगड़ा (1459-1511) को मेवाड़ के शासक राणा कुम्भा का सामना करना पड़ा। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं कि राणा ने सिरोही, आबू तथा नागौर पर अधिकार कर लिया। सिरोही, आबू तथा नागौर पर अहमद शाह के चाचा फिरोज़शाह का शासन था। राणा की इस कार्यवाही के फलस्वरूप राणा कुम्भा को गुजरात, सिरोही तथा नागौर के संयुक्त आक्रमण का मुकाबला करना पड़ा। इस युद्ध का अंतिम परिणाम यह हुआ कि राणा को भारी हर्जाना देकर शांति करनी पड़ी। कुम्भलगढ़ पर दो बार अधिकार होने के बावजूद राणा कुम्भा अपनी राजधानी को अपने पास रखने में सफल रहा।

चम्पानेर के राजपूत राज्य का भी गुजरात के साथ संघर्ष होता रहता था। लेकिन सन् 1483-84 ई. में महमूद बेगड़ा ने अंतिम तौर पर इस राज्य को गुजरात राज्य में मिला लिया और इसका नाम महमूदाबाद रख दिया गया तथा यह गुजरात राज्य की दूसरी राजधानी हो गया। महमूद बेगड़ा के समय में अन्य छोटी राजपूत रियासतों जैसे--जूनागढ़, सोरठ, कच्छ तथा द्वारका पर अधिकार कर लिया गया और मुजफ्फर शाह के शासनकाल के दौरान गुजरात राज्य की सीमाएं दूर-दराज के स्थलों जैसे कि काठियावाड़ प्रायद्वीप तक पहुंच गईं।
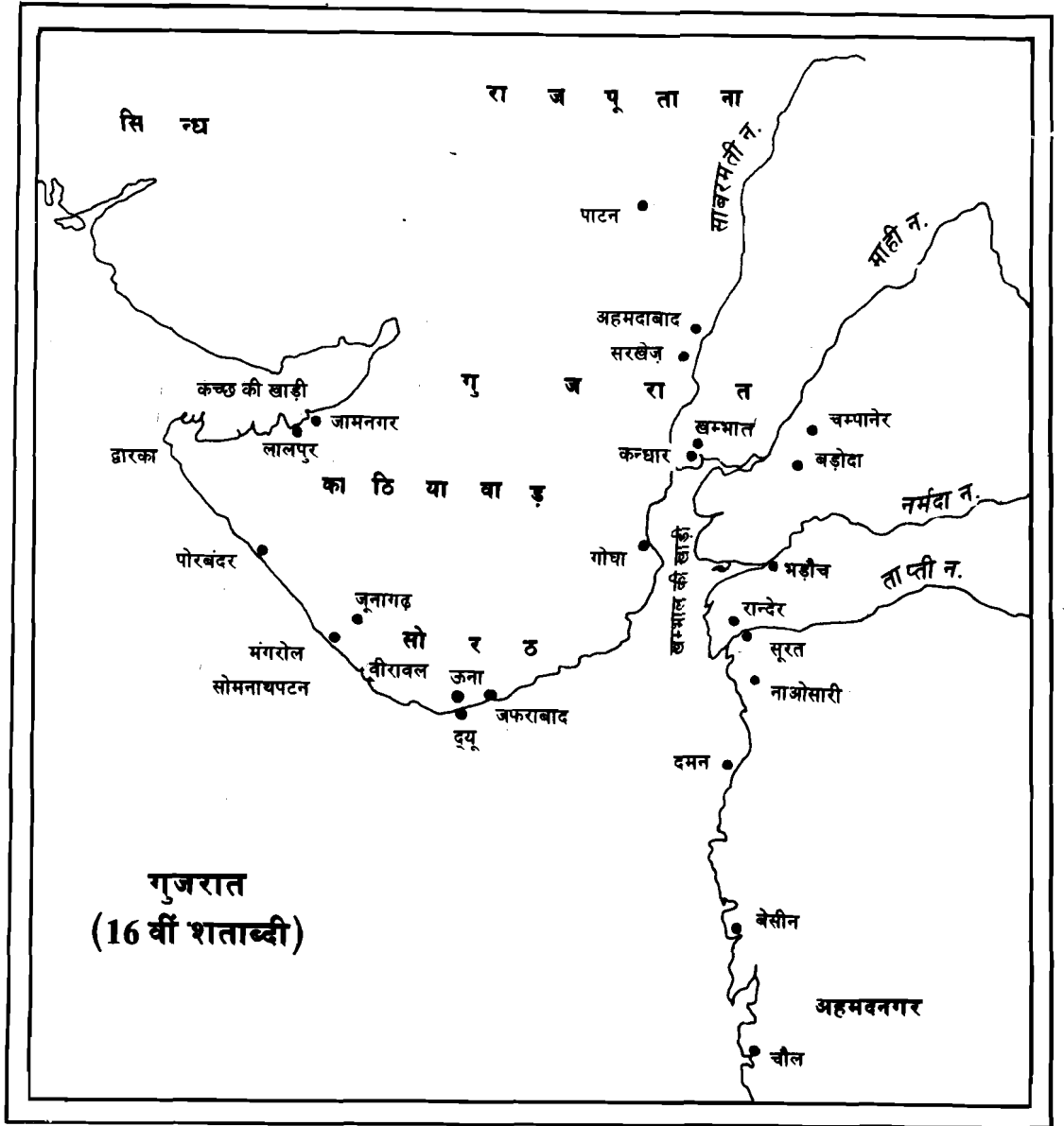
24.4.3 बहमनी तथा खानदेश के साथ संबंध

बहमनी शासक फिरोज़शाह के गुजरात शासकों के साथ मधुर संबंध बने रहे। लेकिन उसकी मृत्यु के बाद अहमद बहमनी के सत्तासीन (1422-1436) होने के साथ इस स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन हुआ। उसने खानदेश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये। 1429 ई. में बहमनी तथा खानदेश खानदेश ने झालावाड़ के शासक राय कान्हा को शरण दी। इस कार्य ने गुजरात के शासक अहमदशाह गुजराती को भड़काया और उसको उनके विरुद्ध बल प्रयोग करना पड़ा। उसने उनको पराजित कर दिया और माहिम पर अधिकार कर लिया। लेकिन बेगड़ा के समय में पुन: सौहार्दपूर्ण संबंधों को स्थापित किया गया। जिस समय मालवा के शासक महमूद खलजी ने बहमनी राज्य पर आक्रमण किया, तब महमूद बेगड़ा इसका पीछा करने के लिए दो बार आया।

महमूद बेगड़ा ने खानदेश शासकों के साथ भी मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखे, लेकिन आदिल खां ने नजराना देना बंद कर दिया और अहमदनगर तथा बरार के साथ मिल गया। इसी

कारण से महमूद बेगड़ा ने खानदेश पर आक्रमण किया और अंततः आदिल खां को महमूद बेगड़ा की अधीनस्थता को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया। लेकिन बेगड़ा ने खानदेश या दौलताबाद पर अधिकार नहीं किया बल्कि उसने यहाँ के शासकों को केवल नजराना अदा करने के लिए बाध्य किया।

महमूद बेगड़ा के सिंध के शासक जाम निजामुद्दीन के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध थे। निजामुद्दीन उसका नाना था और जब सिंध के कबीलाई लोगों ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया तब वह निजामुद्दीन की सहायता करने के लिए गया।

महमूद बेगड़ा ने भारतीय समुद्र में उदित होती पुर्तगाल की शक्ति का भी दमन किया। इस कार्य में उसे मिश्र के शासकों तथा ऑटोमन शासकों द्वारा भेजे गए उनके सेनापतियों अमीर हुसैन तथा सुलेमान रईस ने सहायता प्रदान की। इनकी संयुक्त सेनाओं ने सन् 1508 ई. में चौल में पहली बार पुर्तगाल के जहाजी बेड़े को पराजित किया। और 1509 ई. में अलवुकर्क ने इस संयुक्त सेना को पराजित किया दिया। इसके फलस्वरूप महमूद बेगड़ा ने सन् 1510 में पुर्तगालियों के साथ एक संधि की और उनसे अरब सागर में गुजरात के जहाजों की सुरक्षा का आश्वासन प्राप्त किया।

सन् 1508 में दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर लोदी ने अपना एक दूत गुजरात भेजा। सिकन्दर लोदी तथा ईरान के इस्माइल सफवी जैसे शासकों के दूतों के गुजरात आने से गुजरात के शासक की प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। इससे यह स्पष्ट है कि समकालीन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में महमूद बेगड़ा का महत्वपूर्ण स्थान बन गया था।

24.5 सिंध

भारत की पश्चिमी सीमा पर स्थित सिंध एक दूसरा स्वतंत्र राज्य था। सिंध राज्य में मुसलमान शक्ति की स्थापना का इतिहास सन् 712 में उस समय से प्रारंभ होता है जब मौहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया। ऐसा प्रतीत होता है कि सुमीरों ने सिंध में अपनी शक्ति की स्थापना किसी समय 10वीं सदी ई. में की थी। उनके शासन के विषय में हमें कोई विशेष जानकारी नहीं है और न ही उनके पड़ोसी राज्यों के साथ संबंध के बारे में। लेकिन यदा-कदा उद्धरणों से स्पष्ट है कि उनका प्रभाव देबल तथा मकरान समुद्र तट तक फैला हुआ था। कच्छ के कुछ क्षेत्रों पर भी उनका प्रभाव था। **तारीख-ए जहाँगुशा** के अनुसार सन् 1224 ई. में ख्वारिज़्म के शासक जलालुद्दीन मंगबर्नी ने सुमीर राजकुमार चानेसर को पराजित किया तथा देबल व दमरिल्ह पर अधिकार कर लिया। इल्तुतमिश के शासनकाल में उसके वजीर निजाम-उल मुल्क जुनैदी ने 1228 ई. में सिंध पर अधिकार कर लिया तथा इसके शासक चानेसर को इल्तुतमिश के दरबार में भेज दिया गया। बाद में 1350-51 ई. में मौहम्मद तुगलक ने विद्रोही कुलीन तगी का पीछा करते हुए थट्टा पर आक्रमण किया।

1351 ई. में सम्माहों ने सुमीरों को हराकर उनका स्थान ग्रहण कर लिया। उन्होंने सिंध में 175 वर्षों तक शासन किया। **चचनामा** में यह उद्धृत है कि सम्माह मौहम्मद बिन कासिम की विजय से पूर्व भी सिंध में निवास करते थे। वे मूल तौर पर राजपूतों की यादव शाखा से संबंधित थे और बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। वे मुख्य तौर पर खेती करते थे और उनकी भूमि सुमीरों के अधीन थे। 1360-61 ई. में तथा पुनः 1362 ई. में फिरोज़शाह तुगलक ने जाम जौना तथा थट्टा के बनबेनिया पर आक्रमण किये। जाम को आत्मसमर्पण करना पड़ा। लेकिन 1388 ई. में फिरोज़शाह तुगलक की मृत्यु के तुरंत बाद सम्माहों ने सल्तनत के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और जाम तुगलक के नेतृत्व में स्वतंत्र हो गये। सिंध के जाम शासकों के गुजरात के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे। जाम निज़ामुद्दीन ने अपनी दो पुत्रियों का विवाह गुजरात के शासक के साथ किया और महमूद बेगड़ा उसकी छोटी पुत्री बीबी मुगली का पुत्र था। हम पहले ही देख चुके हैं कि 1472 ई. में महमूद बेगड़ा उस समय जाम निज़ामुद्दीन की सहायता के लिए आया जिस समय समुद्री डाका डालने वाले कबीलों ने विद्रोह करके जाम के प्रभुत्व के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था। सिंध के जाम शासकों में जाम निज़ामुद्दीन (1460-1508) सबसे महान् शासक था और उसके मुल्तान के शासक सुल्तान हुसैन के साथ घनिष्ठ संबंध थे। ईरान के इल खान वंश के अर्घुन शासकों ने जाम निज़ामुद्दीन के शासन के अंतिम वर्षों (1493 ई.) में जाम शक्ति के लिए खतरा उत्पन्न कर

दिया। लेकिन जब तक जाम निज़ामुद्दीन जीवित रहा, तब तक अर्घुनों के आक्रमण सफल न हो सके। लेकिन 1508 ई. में उसकी मृत्यु के बाद अर्घुनों ने 16वीं सदी के दौरान अपना राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर ली।

बोध प्रश्न 3
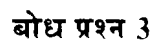
1) मालवा के शासकों के साथ गुजरात राज्य के संबंधों की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

2) सम्माह कौन थे?

....

....

....

....

....

....

....

....

24.6 सारांश

इस इकाई में हमने 13वीं सदी ई. से 15वीं सदी ई. तक उत्तर-पश्चिम भारत में क्षेत्रीय राज्यों के उदय के विषय में विवरण किया। हम देख चुके हैं कि कश्मीर का सल्तनत से बाहर एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उदय हुआ। बहलोल लोदी के शासनकाल को छोड़कर 13वीं सदी से 15वीं सदी ई. तक कश्मीर के संबंध सल्तनत के साथ सौहार्दपूर्ण बने रहे। राजपूताना में जातीय संगठन पर आधारित गुहिल, सिसोदिया एवं राठौड़ जैसे महत्वपूर्ण राज्यों का उदय हुआ। सल्तनत के पतन के परिणामस्वरूप गुजरात एक स्वतंत्र राज्य बन गया। 15वीं सदी के प्रारंभ में इसने एक स्वतंत्र राज्य का दर्जा प्राप्त कर लिया था। गुजरात अपने पड़ोसी राज्यों – मालवा, राजपूताना तथा बहमनी – के साथ लगातार संघर्षरत रहा। इसी दौरान सुदूर पश्चिम स्थित सिंध राज्य ने सुमीरों तथा सम्माहों के अधीन सल्तनत के दासत्व को उतार फेंकने का भरसक प्रयास किया। अपने इस उद्देश्य को वह फिरोज़शाह तुगलक की मृत्यु के बाद ही प्राप्त कर सका।

24.7 शब्दावली

भोग : भू-राजस्व; देवता को दी जाने वाली भेंट

गद्दी : सिंहासन

जाम : यह एक उपाधि थी जिसको सिंध के सम्माह शासकों ने धारण किया

अर्घुन : ईरान के इल खां शासक के वंशज

24.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 24.2
2) देखें भाग 24.2

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 24.3
2) देखें उपभाग 24.3.1, 24.3.2
3) देखें उपभाग 24.3.3

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 24.4.1
2) देखें भाग 24.5